दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट-4

(प्रश्न पत्र-II)

DTVF / OPT-23 **HL-2304**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

नाम (Name): Karnveer Narwadia

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 13 july / 4

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	5	2	6	7	2

200 attempted.

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

There are ***EIGHT*** *questions divided in* ***TWO SECTIONS.***

Candidate has to attempt ***FIVE*** *questions in all.*

Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any ***THREE*** *are to be attempted choosing at least* ***ONE*** *question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answer must be written in ***HINDI*** *(Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained):

टिप्पणी (Remarks):

मूल्यांकनकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) मित्र बनकर रहना स्त्री-पुरुष बनकर रहने से कहीं सुखकर है। तुम मुझसे प्रेम करते हो, मुझ पर विश्वास करते हो, और मुझे भरोसा है कि आज अवसर आ पड़े, तो तुम मेरी रक्षा प्राणों से करोगे। तुममें मैंने अपना पथ-प्रदर्शक ही नहीं, अपना रक्षक भी पाया है। मैं भी तुमसे प्रेम करती हूँ, तुम पर विश्वास करती हूँ और तुम्हारे लिए कोई ऐसा त्याग नहीं है, जो मैं न कर सकूँ। और परमात्मा से मेरी यही विनय है कि वह जीवनपर्यन्त मुझे इसी मार्ग पर दृढ़ रखें। हमारी पूर्णता के लिए, हमारी आत्मा के विकास के लिए और क्या चाहिए! अपनी छोटी-सी गृहस्थी, अपनी आत्माओं को छोटे-से पिंजड़े में बन्द करके, अपने दुःख-सुख को अपने ही तक रखकर, क्या हम असीम के निकट पहुँच सकते हैं? वह तो हमारे मार्ग में बाधा ही डालेगा। कुछ विरले प्राणी ऐसे भी हैं, जो पैरों में यह बेड़ियाँ डालकर भी विकास के पथ पर चल रहे हैं।

हिन्दी उपन्यास परम्परा के पथप्रदर्शक मुंशी प्रेमचंद ने मानव संबंधों को लेकर मनोवैज्ञानिक चित्रण किए हैं। उन्हीं चित्रों का सुन्दर अनुभव तब दिखता है कि जब प्रो. मेहता मालती से शादी के लिए उत्कीर्ण हो गए हैं, वही मालती के लिए ये संबंध संकीर्ण हो गए हैं। इसी की प्रस्तुति उपर्युक्त गद्यांश का सार है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मालती कहती है कि आप मुझपर सर्वस्व न्योछावर करके मेरी हर समय रक्षा भी करोगे। मैं आपके प्रेम के प्रति एकनिष्ठ भी हूँ। यह स्वतंत्र प्रेम है कि इस प्रेम में बंदिशें लगाकर मैं अपनी स्वतंत्रता खो दूँगी। वह रिश्तों के बंधन में बँधकर पवित्र रिश्ता को छोटा नहीं करना चाहती है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

- तत्सम खड़ी बोली का प्रयोग।
- → छायावादी प्रेम की अनुभूति हुई है
- → भाषा का प्रवाह प्रशंसनीय है
- → स्त्री-पुरुषों के संबंध की विवेचना की है।
- → मनोवैज्ञानिकता का चरम स्पर्श दिखता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) इस नयी सभ्यता का आधार धन है। विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय हैं। कभी-कभी इतिहास में ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब धन को आन्दोलन के सामने नीचा देखना पड़ता है, मगर इसे अपवाद समझिये। मैं अपनी ही बात कहती हूँ। कोई गरीब औरत दवाखाने में आ जाती है, तो घण्टों उससे बोलती तक नहीं, पर कोई महिला कार पर आ गयी, तो द्वार तक जाकर उसका स्वागत करती हूँ। और उसकी ऐसी उपासना करती हूँ, मानो साक्षात् देवी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी उपन्यास परम्परा के प्रतिनिधि कवि प्रेमचन्द ने गोदान में ग्रामीण कथा के साथ-साथ शहरी कथा को भी समावेशित किया है। जिसके लिए वे ~~मिस्टर~~ मेहता, मिस मालती तथा गोबर का सहारा लेते हैं।

उपर्युक्त कथ्य में मिस मालती मेहता जी धन की महत्वशीलता समझाकर सभ्यता के रंग से परिचित करवा रही हैं।

मिस मालती है कि यह सभ्यता धन की नींव पर बनी है जिसमें धन के आगे सब नगण्य है। इतिहास में भी धन का महत्व जगह-जगह दिख जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसी तरह वह अपना उदाहरण देती है कि अगर कोई धनी वर्ग से मरीज आता है तो उसकी सेवा होगी और उसे अधिक महत्व देगी।

सौन्दर्य- शिवप्रसाद सितारे व लक्ष्मण प्रसाद सिंह से अलग हिन्दुस्तानी खड़ी बोली।

विशेष

(i) पूँजीवादी वर्ग की विशेष अभिव्यक्ति।

(ii) अमीरी- गरीबी के वर्गभेद को स्पष्ट किया है।

(iii) तत्सम भाषा का प्रयोग पात्रों के अनुकूल है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है! अन्धकार का आलोक से, असत् का सत् से, जड़ का चेतन से, और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से संबंध कौन कराती है? कविता ही न!

नाटककार जयशंकर प्रसाद इतिहास का सर्जनात्मक प्रयोग करते हुए नाटक का कथानक बुनते हैं। उपर्युक्त कथन स्कंदगुप्त से लिया गया है जहाँ मातृगुप्त कविता को परम्परा विरोधी तत्वों को जोड़ते हुए दिखाया है।

मातृगुप्त कहता है कविता से उन चित्रों का वर्णन होता है जो भावनात्मक संगीत की परिपूर्णता से आभास दिलाता है। आगे कहता है कि अंधकार का प्रकाश, जड़ का चेतन तथा आन्तरिक मन का बाह्य मन से जुड़ाव कविता ही कराती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष

तत्सम भाषा की पुनः अभिव्यक्ति

सौन्दर्य

(I) कविता का महत्व नाटक में समझाया है।

(II) दार्शनिक चेतना की मिठास मिलती है।

(III) प्रवाही भाषा, भावपूर्ण संगीतात्मकता से युक्त है।

(IV) कविता की यही विशेषताएँ शुक्ल जी "कविता क्या है" निबंध में बताते है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) जीवन का कोई अनुभव स्थायी और चिरन्तन नहीं। जीवन की स्थिति समय में है और समय प्रवाह है। प्रवाह में साधु-असाधु, प्रिय-अप्रिय सभी कुछ आता है। प्रवाह का यह क्रम ही सृष्टि और प्रकृति की नित्यता है। जीवन के प्रवाह में एक समय असाधु, अप्रिय अनुभव आया इसलिये उस प्रवाह से विरक्त होकर जीवन की तृषा को तृप्त न करना केवल हठ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) इसे ले तो जा रहा हूँ, पर इतना कहे देता हूँ, आप भी समझा दें उसे- कि रहना हो तो दासी बनकर रहे। न दूध की, न पूत की। हमारे कौन काम की, पर हाँ, औरतिया की सेवा करे, उसका बच्चा खिलावे, झाड़ू, बुहारु करे तो दो रोटी खाय, पड़ी रहे। पर कभी उससे ज़बान लड़ायी तो खैर नहीं। हमारा हाथ बड़ा ज़ालिम है। एक बार कूबड़ निकला, तो अगली बार प्रान ही निकलेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर 11
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'अपने उपन्यासों एवं कहानियों में प्रेमचंद की बुनियादी चिन्ताएँ अपने समय की भी हैं और भविष्य की भी हैं।' इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कोई भी रचनाकार अपनी लेखन क्षमता से न केवल तत्कालीन समस्याओं और समाधानों को दिखाता है, वह तो भविष्य की तरफ ईशारा भी करता है, और जहाँ तक प्रेमचंद की बात है वह तो युगपरिवर्तनशील लेखक है तो स्वभाविक है चिरकालिक लेखन परम्परा का अनुसरण होगा।

मुंशी प्रेमचन्द ने 1916 से 1936 तक लेखन कार्य किया, सर्वप्रथम उन्होंने उपन्यास में सेवासदन के माध्यम से वेश्याओं की मार्मिक स्थिति का वर्णन किया है, जहाँ वे 'सुमन' के माध्यम से वापिस मुख्यधारा मे लाने का आदर्शवादी प्रयास करते है।

इसके आगे के क्रम में 'प्रेमाश्रम'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की रचना करते है जिसमें जमींदार, साहूकार के द्वारा शोषणपरकता पर निशाना साधते है, वस्तुतः ये समस्याएँ आज भी भूमि सुधार ना होनें के कारण व्याप्त हैं। इसी तरह का प्रयास कहानी मे 'पूस की रात' मे करतें है।

साम्प्रदायिकता की समस्या को अपने उपन्यास 'कायाकल्प' मे उठाते है जहाँ चक्रधर नामक युवक का मुस्लिम परिवार की विधवा से शादी कर लेता है, साम्प्रदायिकता की समस्या वर्तमान में भी समाज में व्याप्त है जिसका ताजा उदाहरण दिल्ली दंगे (2021) में देखनें को मिले है।

'कफन' कहानी में प्रेमचंद ने दो गरीब लोगों कें माध्यम सें गरीबी का कुचक्र दिखाया है कि कैसे कफन के लिए पैसों से भी अपना पेट भरते है, इस तरह

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

गरीबी की परिणति "गोदान" के माध्यम से व्यक्त हुई है जिसका चरम स्तर होरी-धनिया के बच्चों की मौत पर समाप्त होता है। यह समस्या विश्व बैंक के अनुसार कोविड 19 के बाद लगभग 45 मिलियन लोग गरीबी की चपेट में वापिस आ गए है।

हरिजनों / दलितों की समस्या का विशद चित्रण 'कर्मभूमि' उपन्यास में अमरकांत के माध्यम से करतें है. इसी तरह का प्रयास में कहानी में भी करते है जब ब्राह्मण के घर नीचें जात वालें व्यक्ति की मौत हों जाती है। यह समस्या भी वर्तमान समाज में व्याप्त है. जिसकें बारें मे बाद में मनु भण्डारी तथा नागार्जुन नें भी पैन चलाई है।

इन सभी समस्याओं का एकीकरण प्रेमचंद 1936 में आकर करते है जहाँ 'गोदान' के कथानक में होरी के माध्यम सें

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

मरजाद- बिरादरी, गोदान के माध्यम से महाजनी सभ्यता, सिलिया के माध्यम से जाति व्यवस्था पर तीक्ष्ण टिप्पणी करते हैं।

रामविलास शर्मा ने सही कहा है "अगर 1918-36 का इतिहास गायब भी हो जाए तो प्रेमचन्द के साहित्य से भारत का अनुमान लगाया जा सकता है"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'खोई हुई दिशाएँ' कहानी में नई कहानी की विशेषताएँ किस रूप में दिखाई देती हैं? प्रकाश डालिये। 15

'नई कहानी' में उस दौर का कथानक मिलता है जब स्वतंत्रता को लेकर संशय भाव बोध हो रहा था, शहरीकरण की प्रवृत्ति चरम पर थी. लोगों में आत्मीयता के संबंधों में बिखराव आ रहा था। अतः यह जीवन का अकेलापन, अजनबीपन, निरर्थकता बोध नई कहानी में साफ नजर आता है।

इसी नई कहानी का प्रतिनिधित्व करती है- कमलेश्वर की खोई हुई दिशाएँ, जिसमें चन्दर नामक युवक पुराने शहर इलाहाबाद से दिल्ली आ जाता है, उसे दिल्ली में जो आत्मीयता मिलती, उसकी तुलना जब वह इलाहाबाद से करता जो वह अकेलापन व अजनबीपन से छटपटा जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

चन्दर को दिल्ली मे आकर 'आनंद' जैसा दोस्त मिला, जो स्वार्थी था, वहीं बिशर कपूर जैसे पड़ोसी जिनसें वह एक बार भी नहीं मिल पाता, वही जब ऑटों में बैठता तों ऑटोवाला चिर- परिचित आत्मीयता दिखाता, लेकिन वह भी उतरने पर दिखावें के लिए दुर्व्यव्हार करता।

इसी क्रम में जब वह अपनी पूर्व प्रेयसी इन्द्रा से मिलने जाता है, उसकों आभास है कि चन्दर का दो चम्मच चीनी से गला खराब हो जाता है फिर भी वह पूछकर डाल देती है, जिससे चन्दर निराश होता है।

इस निराश में वह अपने घर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

आता है और निर्मला से अपनत्व का बोध होता है लेकिन जब निर्मला करवट बदल लेती है तब चन्दर उससे छूकर, जगाकर पूछती हो- 'मुझे पहचानती हो निर्मला, मुझे पहचानती हो'

यह नयी कहानी का चरम बिन्दु है, इसी तरह अकेलेपन, आत्मीयता की त्रासदी 'आषाढ़ के एक दिन' मे कालिदास में होती है, जब वह कहता है- "मुझे पहचानती हो, न पहचानना ही स्वभाविक है।"

अतः नयी कहानी के दौर की परिस्थितियों का मार्मिक चित्रण खोई हुई दिशाएँ' कहानी मे किया गया है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कविता क्या है' निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की काव्य-दृष्टि पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल 'भावप्रधान निबन्धकार' थें, उन्होंनें इसमें सूत्रनिगमन शैली का प्रयोग किया। 'कविता क्या है' श्रद्धा एवं भक्ति इस दृष्टि से उत्कृष्ट निबंध है।

शुक्ल जी ने अपनी काव्यशास्त्रीय मान्यताओं का प्रक्षेपण 'कविता क्या है' निबंध में किया। सर्वप्रथम में कविता का उद्देश्य लोकमंगल की साधनावस्था से करते है। जहाँ वे लिखते है

"हृदय की इस मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आयी है, कविता कहलाती है।"

तत्पश्चात् कविता व जगत के संबंध में "सभ्यता का आवरण' मार्मिक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

दृष्टि इत्यादि को कविता का विषय बनाते हैं।

इसके तत्पश्चात् काव्य के कुछ तत्वों जैसे भावना, कल्पना, बिम्ब, भाषा, अलंकार, सौन्दर्य इत्यादि की व्याख्या करते है। वे लिखते हैं कल्पना . विधायक व ग्रहक दो प्रकार की होती हैं, प्रथम कवि के लिए दूसरी पाठक के लिए सुयोजित होती है।

बिम्ब के लिए कहते हैं" कविता में बिम्ब ग्रहण अपेक्षित होता है"। वही अलंकार को तीखे बातों से काटते है और कहते हैं 'जिस प्रकार कुरूप स्त्री गहनों से सुन्दर नही हो सकती, उसी प्रकार अलंकार का ढेर सजीव काव्य को खड़ा नही कर सकता है। भाषा का नाद सौन्दर्य तथा बोध सौन्दर्य का विषय मानते हैं। वही वक्रता में भावप्रेरित वक्रता की प्रशंसा तो बुद्धिप्रेरित वक्रता पर कटाक्ष।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

निबंध में आगे वे कविता और मार्मिक जीवन के संबंधों का स्पष्टीकरण करते हैं। साथ ही मनुष्यत्व व पशुत्व का अंतर भाव योग के आधार पर व्याख्यापित करते हैं।

अतः हम कह सकते हैं शुक्ल जी का निबंध 'कविता क्या है' में काव्य प्रवृत्तियों का वर्णन करते हैं जो एक तरह से सैद्धान्तिक समीक्षा का आधार तैयार करते हैं और इसी आधार पर साहित्य पर व्यवहारिक समीक्षा तय की जाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) मोहन राकेश चाहते थे कि 'आषाढ़ का एक दिन' के माध्यम से हिन्दी का एक मौलिक रंगमंच स्थापित करें। इस संबंध में उनकी दृष्टि स्पष्ट करते हुए बताएँ कि वे कहाँ तक सफल हो सके? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) गुलाबराय के निबंध भारतीय संस्कृति के प्रतिपाद्य का उद्घाटन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गुलाबराय एक सजग, सर्जनशील निबन्धकार थे। उन्होंने अपने निबन्ध मे सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, संस्कृति इत्यादि को समावेशित किया है।

इसी परिप्रेक्ष्य मे 'भारतीय संस्कृति' निबन्ध में राय जी ने विचारपरकता अपनाई है जहाँ वे सर्वप्रथम संस्कृति की परिभाषा देते है। और इसे अंग्रेजी शब्द 'CULTURE' से जोडकर दिखाते है। संस्कृति का अर्थ है- सुधारना, उत्तम करना, परिशोधन, वहीं एग्रीकल्चर में भी 'कल्चर' का वही अर्थ है।

इसके बाद वे संस्कृति के दो पक्षों आन्तरिक तथा बाह्य शामिल करते है। बाह्य पक्ष में रहन-सहन, वस्त्र, रीतियों, भोजन इत्यादि को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

शामिल करते है, वहीं आन्तरिक में सामाजिक तथा राजनीतिक पक्ष को शामिल करते हैं।

राय जी ने संस्कृति को बाह्य पक्ष मानते हुए इसकी जलवायु पक्ष का मुहावरों तथा लोकोक्तियों पर प्रभाव दिखाया है। जैसे - भारत गरम देश है, यहाँ हृदय को ठंडा करना एक मुहावरा है, वही यूरोपीय देशों मे ऐसा नहीं होता होगा।

इसी तरह किसी भी देश का रहन, सहन, खान-पान इत्यादि देश की सामाजिक भौगोलिक स्थितियों को प्रभावित करता है। जैसे- हमारे देश में बार-बार हाथ धोना, जमीन पर बैठकर खाना, जूतो का इतना मान नही, यह सब संस्कृति का प्रभाव दिखाता है। यहाँ नहाने के पानी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को भी धर्म से जोड़ दिया गया है क्योंकि उसकी कमी नहीं है।

इसी प्रकार उन्होंने आंतरिक पक्षों पर बल दिया है जिसमें अध्यात्मिकता, समन्वय बुद्धि, अहिंसा आदि शामिल है।

आगे बढ़ते हुए गुलाब राय जी ने संस्कृति के क्या शास्त्रवाद से प्रभाव को जोड़ है। जहाँ पश्चिम में भेद की नीति वही यहाँ संलयन पर बल दिया जाया है।

अन्त मे लेखक ने सांस्कृतिक संक्रमण की चिन्ता को व्यक्त किया है। वे कहते हैं

"अन्य संस्कृतियो से भी कुछ तत्वों का स्वीकार करना स्वभाविक है लेकिन हमें अपनी मूल संस्कृति से समझौता नही करना चाहिए"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके लिए वे भारतीय तथा इस्लामी संस्कृति के तहजीब को भारतीय-अंग्रेजी की तुलना करके देखते है।

अतः हम कह सकते है गुलाब राय जी की नजर में संस्कृति आन्तरिक तथा बाह्य पक्षों से प्रभावित होती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'भारत-दुर्दशा' नाटक के रचना-उद्देश्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा नव जागरण तथा राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित होकर अनेक रचनाकर्म किए- भारत दुर्दशा, नीलदेवी वैदिक हिंसा हिंसा न भवति इत्यादि।

भारत दुर्दशा एक प्रतीकात्मक नाटक है जिसमें वे भारत की दुर्दशा के कारणों की खोज करते हैं- आन्तरिक कारणों में आलस्य, धार्मिक भेदभाव, रोग इत्यादि दिखाते है।

"मदवा पीलें पागल, जीवन बीत्यौ जात
बिनु मद जगत सार कछु नाहि।"

"शैव शाक्त वैष्णव, अनेक मत प्रगटि चलाए"

"दुनिया में हाथ पैर हिलाना नहीं अच्छा
मर जाना पै, उठी जाना नहीं अच्छा"।

इसी क्रम में वे बुद्धिजीवी वर्ग की समीक्षा करते हैं और दिखाते हैं कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कवि जोश भरने की बजाय चूड़ी पहनने को कहता है तो कोई अंग्रेजों की तरह कोट पहनने को कहता है। यह शून्यता भारतेन्दु को अखरती है।

वही अंग्रेजी राज की समीक्षा भी की है।

"देखो विद्या का सूर्य पश्चिम -- अब जागो।
मूर्खों के प्रचण्ड शासन के दिन गए।

अंगरेज राज सुख साज सजे सब भारी
पै धन विदेश चलि जात, अति भारी
× × × × ×
सबके ऊपर टिकस की आफत आई
हा हा। भारत दुर्दशा न देखि जाए।

यह सब के पीछे भारतेन्दु का दृष्टिकोण था - लोगों में नवजागरण की भावना भर, कर्मशील बनाना। वे रचना को अन्त में भगवान का कोठा ला कर सुखद अनुभव कर सकते थे लेकिन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

त्रासद अन्त मनुष्य को समझौता कर लेता है।

वही पश्चिमी शिक्षा, आधुनिकीकरण, उद्योगीकरण पर भी वे बल दे रहे थे जिससे क्रमशः भारत का विकास हो पाता।

साथ ही इतिहास बोध के प्रति रोमानी भाव लाकर भी मनुष्य जाति को वे जागृत करने का प्रयास कर रहे थे।

"सबके पहिले जेहि ईश्वर धन बल दीनो
सबके पहिले जेहि सभ्य विधाता कीनो।

अतः भारतेन्दु का काव्य नवजागरण की प्रेरणा से स्वाभिमान उत्पन्न करना था। इसके लिए वे गौरवशाली अतीत का हवाला देते हुए इतिहास का प्रयोग करते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी उपन्यास की विकासयात्रा में 'महाभोज' उपन्यास के महत्त्व के कारणों का निर्देश कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मन्नु भण्डारी का 'आपका बंटी' के उपन्यास लिखने के बाद 'महाभोज' का कथानक पाठक को मजबूर कर देता है कि ऐसा क्या हुआ जो ऐसी सामाजिक विद्रुपता, राजनीतिक व्यवस्था पर कटाक्ष व्यंग्य किया हो।

'महाभोज' उपन्यास मन्नु भण्डारी ने 70 के दशक में 'बेलछी काण्ड' के बाद में लिखा। जिसका संकेत वह शुरू मे करती है।

"अभी महीने भर पहले ही की तो बात है- गॉव की सरहद पर जरा परे हटकर हरिजन टोला है, वहाँ झोपडियों में आग लगा दी गई आदमियों सहित"

इसके कारण वह राजनीतिक विद्रुपता में देखती है-

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

जब बिसु की मौत के बाद सुकुल बाबू अपनी राजनीतिक रोटियॉ सेकने का काम करते हैं, वही जोरावर सोचता है-

"इन हरिजनों के बाप दादे हमारे बाप-दादों के सामने झुके रहते थे झुके-झुके कमर तीन कमान हो जाती थी।-- ऑख मे ऑख गाड़कर बात करते हैं, सहन नही होता"

वही दा साहब के मुँह से राजनीतिक व्यक्तित्व का दोगलापन दिखाया है-

"बात को अपने मन मे होने वाली उथल-पुथल से काटकर भी किया जा सकता है- यह गुर कोई दा साहब से सीखे"।

साथ ही शहरी-ग्रामीण संघर्ष भी पुलिस कर्मी तथा सुकुल बाबू की नजरो मे दिखता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महाभोज का महत्व इसीलिए है कि आजादी के 20 वर्षों बाद भी कुछ जातियाँ अपने अधिकारों के लिए बहुत पिछड़ चुकी थी और उनका संघर्ष के लिए आवाज उठाना ऊपरी जाति को स्वीकार नहीं था।

हालांकि इस उपन्यास मे भण्डारी जी ने समाधान के 'संकेत के लिए प्रयास किया है वह अन्त में कहती है-

" वह दुर्निवार सम्मोहन भरी भाग "

यह चेतना नागार्जुन की 'हरिजनगाथा' वाली ही है जिसे वे बच्चो में फूंक रहे थे।

अतः मन्नू भण्डारी हरिजनो की समस्या उठाकर देश की राजनीतिक - सामाजिक विद्रुपता को व्यक्त किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) हमारा सृष्टि-संहार-कारक भगवान् तमोगुणजी से जन्म है। चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन हैं। पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित्त में हमारा निवास है। हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेत्र हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं। हमारे दो स्वरूप हैं, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक जो लोक में अज्ञान और अंधेरे के नाम से प्रसिद्ध हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) जीवन में एक समय प्रयत्न की असफलता मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन नहीं है। जीवन का हम अन्त नहीं देख पाते, वह निस्सीम है। वैसे ही मनुष्य का प्रयत्न और चेष्टा भी सीमित क्यों हो? असामर्थ्य स्वीकार करने का अर्थ है, जीवन में प्रयत्नहीन हो जाना, जीवन से उपराम हो जाना।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

यशपाल ने 'दिव्या' उपन्यास के माध्यम से नारी की स्वाधीनता के लिए आवाज उठाई है। जो तत्कालीन स्वाधीनता आंदोलन को सामाजिक स्वाधीनता की नई राह दिखाता है।

प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रेस्थ द्वारा प्रद्युम्न को दिव्या के प्रेम के कारण गणपति की पुत्री से विवाह टुकराने के बाद कही गई हैं

प्रेस्थ कहता है, प्रद्युम्न दिव्या के प्रेम के चक्कर में तुम गणपति की कन्या का प्रस्ताव टुकराकर गलत कर रहे हो। मेरे जीवन भर के प्रयत्नों तथा अपने वंश को उच्च कुल में स्थापित

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

करने का मौका चला जाएगा। स्त्री केवल भोग्या है। उसके लिए सामर्थ्य का त्याग मत करो। सामर्थ्यवान मनुष्य अनेक स्त्रियों का भोग कर सकता है। हे पुत्र! ऐसी ही परिस्थिति को नीति महत्वाकांक्षी तथा स्वर्गगामी पुरुष का पतन के द्वार से कहा जाता है।

विशेष

तत्सम खड़ी बोली का प्रयोग।

→ प्रेष्य के माध्यम से स्त्री भोगवादी नजरिया पर बल।

→ वर्णव्यवस्था का संकट दिखता है

→ प्रेम की छायावादी अनुभूति दिखती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) संसार से तटस्थ रह कर शांति-सुखपूर्वक लोक-व्यवहार-संबंधी उपदेश देने वालों का उतना अधिक महत्त्व हिन्दू धर्म में नहीं है जितना संसार के भीतर घुस कर उसके व्यवहारों के बीच सात्विक विभूति की ज्योति जगाने वालों का है। हमारे यहाँ उपदेशक ईश्वर के अवतार नहीं माने गए हैं। अपने जीवन द्वारा कर्म-सौंदर्य संघटित करने वाले ही अवतार कहे गए हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) उसकी आंखें बन्द हो गयीं और जीवन की सारी स्मृतियाँ सजीव हो-होकर हृदय-पट पर आने लगीं, लेकिन बे-क्रम, आगे की पीछे, पीछे की आगे, स्वप्न-चित्रों की भाँति बेमेल, विकृत और असम्बद्ध। वह सुखद बालपन आया, जब वह गुल्लियाँ खेलता था और माँ की गोद में सोता था। फिर देखा, जैसे गोबर आया है और उसके पैरों में गिर रहा है। फिर दृश्य बदला, धनिया दुलहिन बनी हुई, लाल चुंदरी पहने उसको भोजन करा रही थी। फिर एक गाय का चित्र सामने आया, बिल्कुल कामधेनु-सी। उसने उसका दूध दुहा और मंगल को पिला रहा था कि गाय एक देवी बन गयी और...।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गोदान उस दौर की रचना है जब प्रेमचन्द आदर्शवाद से बाहर निकलकर कठोर यथार्थवाद की ओर गमन कर रहे थे। वस्तुत: जब मजदूर-बिरादरी के शोषण से होरी की मौत होने लगती है तब उसकी सम्पूर्ण जीवन का मार्मिक दृश्यों की अभिव्यक्ति हुई।

प्रेमचन्द कहते हैं होरी के मरने से पहले उसके मन: स्तर पर सारी जीवन प्रणालियाँ पटल पर आने लगी। उसका सुखद <u>बालपन</u> से <u>विवाहित</u> स्मृतियाँ का चित्र आता है। वह

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भाते हुए गाय को लेकर सोच रहा था उस कामधेनुरूपी गाय का दूध निकालकर अपने पोते मंगल को पिलाना चाहता है।

विशेष

हिन्दुस्तानी शैली खड़ी भाषा का प्रयोग।

→ यथार्थवाद की कठोर अभिव्यक्ति।

→ पाठक को विरेचन की स्थिति की अनुभूति।

→ मनोवैज्ञानिकता का सूक्ष्म चिंतन।

→ 'गोदान' शीर्षक की सार्थकता सिद्ध होती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) मैला आँचल की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'दर्शन में प्रसाद की गहरी अभिरुचि थी जिसे उन्होंने अपनी रचनाओं में घुला दिया है।' इस कथन के आलोक में 'स्कंदगुप्त' नाटक की दार्शनिक भंगिमा पर विचार कीजिये। 20

साहित्य समाज एवं दर्शन के जुड़ाव से प्रतिबिम्ब दिखाता है. वही प्रयास प्रसाद ने किया है। प्रसाद दर्शन के अध्येता तथा साहित्य के सर्जक थे। वे दार्शनिक विषयों की सारणियों को साहित्य का विषय बनाते थे।

दार्शनिक चेतना की 'स्कंदगुप्त' में बात करे तो पाते है कि प्रसाद का मूल दर्शन प्रत्यभिज्ञावाद या आनंदवाद का पुट मिलता है जहाँ जीवन का उद्देश्य ज्ञान, इच्छा, क्रिया का समन्वय प्राप्त कर आनंदवाद या समरसतावाद की स्थिति प्राप्त कर लेना है। नाटक के प्रथम वर्ग में स्कंदगुप्त "अधिकार सुख कितना मादक तथा सारहीन" बताता है। वही अपने जीवन का उद्देश्य"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बौद्धों का निर्वाण, योगियों की
समाधि तथा पागलों की सम्पूर्ण
विस्मृति प्राप्त करना बताता है।"
यही आनंदवादी दर्शन कामायनी
तथा उनके अन्य काव्यों में दिखता है।

इसके अलावा अनेक दर्शनों की
पुट मिलती है जब बौद्ध दर्शन का प्रभाव
भी धातुसेन के माध्यम से दिखता है.
बौद्धों में क्षणवाद को महत्व दिया जाता
है, बुद्ध कहते है - पानी में डूबकी लगाने पर
जाते हुए और उपर आते हुए बहुत परिवर्तन
हो जाता है। धातुसेन कहता है-

"परिवर्तन ही सत्य है। जीवन है स्थिर है,
निश्चेष्ट शांति मरण है' प्रकृति
क्रियाशील है।"

आगे के क्रम में प्रसाद मार्क्सवाद
के बारे में प्रभाव दिखाते है जब पर्णदत्त

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कहता है-

"अन्न पर स्वत्व है भूखो का, धन
पर स्वत्व है देशवासियो का"

एक अन्य प्रमुख तत्व वेदांत दर्शन का
भी दिखता है, जहाँ शंकराचार्य जैसे
जगत को मिथ्या बताते है, वही टैगोर,
डॉ राधाकृष्णन, गाँधी परम परमात्मा की
आह्लादपूर्ण अभिव्यक्ति बताते है। ~~शुक्ल~~
प्रसाद कहते है-

"प्रत्येक कम्प मे ताल है, विश्व मे
लय है, प्रत्येक हरी पत्ती के
मिलने में लय है।"

इसके साथ ही वे कमला के माध्यम
से अवतारवाद को भी दिखाते है।

"क्या तुम राम और कृष्ण के समान
अवतार नहीं हो सकते। समझ लो

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

जो अपने कर्मों को शिव का समझ कर करता है वह शिव है"

अतः श्रीरेफ ने कहा था कि प्रसाद इतने दर्शनों को एक साहित्य मे समाहित करते हैं जिनसे यह समीक्षकों के लिए अद्‌भुत नजर आती हैं। ये दर्शन उनकी रचनाओं में घुलकर मिठास पैदा करते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) शिल्प की दृष्टि से 'कुटज' निबंध का विवेचन कीजिए। 15

हजारीप्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य के 'ललित निबंध' की परम्परा के लेखक हैं जिसमें वे सजगता, सृजनता, [illegible] से हिंदी निबंध को नयी दिशा प्रदान करते हैं। वे निबंध में "कुटज", 'अशोक के फूल', 'विचार और वितर्क' पर लेख चलाते हैं।

कुटज के माध्यम से द्विवेदी जी ने मानव दर्शन तथा जीवन संदेश प्रस्तुत किया है, वे अशोक के फूल जैसे निबंध में 'साहित्य का लक्ष्य मानव' को ही मानते हैं। अतः स्वभाविक था शिल्प का सुव्यवस्थित प्रयोग करना!

शिल्प सौन्दर्य मे सर्वप्रथम द्विवेदी जी ने प्रकृति का मानवीय आख्यान किया, जहाँ वह कुटज पौधे का वर्णन करते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

ललित निबंध होने के कारण गूढ़ परम्परा के साथ आत्मीय बातचीत का प्रयोग हुआ है। यही आत्मीयता विशिष्ट शैली में उभर कर आती है।

द्विवेदी जी ने संवादों का विस्तार के लिए छोटे-छोटे प्रश्न पूछ कर उनका जवाब देकर कथानक का विस्तार किया जो एक अद्भुत तथा अनुभूतिपरक प्रयोग था।

द्विवेदी जी ने निबंध में गहन व्यापक अध्ययन, कला, संस्कृति और साहित्य का पर्याप्त बहुआयामीय वर्णन किए हैं।

भाषा शैली में सूक्तिपरकता आती है जो एक प्रकार से सूत्र शैली का उदाहरण बनता है। स्वभाविक प्रयोग सुन्दर तथा रमणीय है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

निबन्धों तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है लेकिन साथ ही सामान्य भाषा का भी प्रयोग जो पाठ्य वर्ग में जिज्ञासा अनुभव कराती है।

इसके साथ ही निबंध में मुहावरे, लोकोक्तियों इत्यादि का सुंदर प्रयोग हुआ है।

अतः समग्रतः यह कुटज निबंध अपनी शिल्पगत वैशिष्ट्य के लिए समीक्षागत विषयों में शामिल रहा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'अप्रमाणिकता का संकट' 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की संवेदना का मुख्य पक्ष है।' इस कथन पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अस्तित्ववाद एक यूरोपीय दर्शन है, जिसका प्रारम्भ हीगेल के 'बुद्धिवाद' के विरोध में शुरू हुआ। सॉरेन कीर्केगार्द का यह प्रयास प्रथम द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सार्त्र, कामू ने चरम पर पहुँचाया। इसी अस्तित्ववाद का प्रभाव मोहनराकेश के 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक पर दिखता है।

नाटक के नायक कालिदास का सामान्य जीवन यही होता कि ग्रामीण जीवन में प्रकृति के समीप रहते हुए कविताओं की रचना करता लेकिन यह स्वतंत्रता भौतिक स्थितियों के दबाव में खण्डित होती है वह गुप्त साम्राज्य मे कवि का आसन चुन लेता है, यह अस्तित्वाद पर सैरूटवाला फैसला है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दूसरा संकट आता है जब वह काश्मीर का शासन संभालने को मान जाता है तब वह स्वयं भी मानता है'

"तुम्हें बहुत आश्चर्य कश्मीर का शासन संभालने जा रहा हूँ, अभावपूर्ण जीवन की पहली प्रतिक्रिया थी। उसमें उन सबसे प्रतिशोध लेने की भावना थी उन्होनें जब भी मेरी भर्त्सना की हो या उपहास उड़ाया हो।"

इसी अस्तित्वाद के परिमाण स्वरूप व्यक्ति का व्यक्तित्ववाद अलग हो जाता है। वह बार-बार अपने स्व को संकट मे लाता है। मुक्तिबोध के 'अंधेरे मे' भी यही संकट है जब वह कहता है।

"संभवत: पहचानती नहीं हो, न पहचानना ही स्वभाविक हूँ... सच कहूँ तो मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहचानती हो, मैं तो वह हूँ जिसे मैं खुद नहीं पहचानता"

इसी तरह का संकट मल्लिका शुरुआत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में प्रमाणिकता स्थापित करती है।

"क्या अधिकार है उन्हें कुछ कहने का मल्लिका का जीवन उसकी सम्पत्ति है"

लेकिन आगे वह भी कालिदास पर निर्भर हो जाती है, उसका 'स्व' 'पर' में बदल जाता है, जो अस्तित्ववादी दृष्टि से सार्थक नहीं है।

अतः मोहनराकेश ने तत्कालीन समस्याओं में प्रमुख अस्तित्ववाद को 'कालिदास' की कहानी से उठाया है जो पाठक को सहज ही अचंभे में डाल देता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation